अध्याय 4

भूमि

भूमि के संदर्भ में भारतीय अवधारणा

'जननी जन्मभूमि स्वर्गादपि गरियसी' भारतीय ग्रन्थों में मातृभूमि एवं माँ को स्वर्ग से भी श्रेष्ठ माना गया है। भारतीय अवधारणा के अनुसार जो भी हमें देता है या जिसमें मानव जाति के कल्याण के गुण समाहित हैं, उसे देवता कहते हैं। इसलिए हमारे यहाँ जल देवता, वायु देवता, अग्नि देवता आदि शब्दों का प्रयोग किया गया है, लेकिन भूमि को माता का स्थान प्राप्त है। अन्न, वस्त्र, आवास संबंधी हमारी समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति धरती माता से ही होती है। अतः धरती पर जन्म लेने वाले सभी जीवों का पालन–पोषण धरती माता ही करती है।

वर्तमान में अत्यधिक जनसंख्या वृद्धि के बावजुद भी धरती माता सबकी आवश्यकताओं की पूर्ति कर रही है। कृषि करते समय इस बात का ध्यान रखना पड़ेगा कि रासायनिक खाद एवं कीटनाशक दवाइयों के उपयोग से उत्पादन में वृद्धि तो होती है, लेकिन कालान्तर में भूमि की गुणवत्ता में कमी होती जाती है। अतः रासायनिक खादों एवं कीटनाशक दवाइयों का कम उपयोग एवं जैविक खाद का अधिकतम उपयोग, मृदा कटाव को रोकना, फसल चक्र एवं परती भूमि छोड़ना, दलहन फसलों का उत्पादन आदि के द्वारा मृदा की गुणवत्ता को बढ़ाया जा सकता है। भूमि को वनों से आच्छादित रखते हुए भूमि का हर प्रकार से संरक्षण एवं संवर्द्धन किया जाना चाहिए।

अनुपम अपनी छोटी बहन लक्ष्मी के साथ गेंद से खेल रहा था। उसने गेंद को जोर से दूर फैंका। लक्ष्मी गेंद के पीछे दौड़ी। अनुपम भी पीछे–पीछे भागा। गेंद शंभू काका के खेत में जाकर गिरी। खेत में सब्जियाँ उग रही थीं। शंभू काका नाराज हो गए। अनुपम, लक्ष्मी को लेकर पास की बंजर भूमि पर जा कर खेलने लगा। जमीन उबड़–खाबड़ थी, खेलने का मज़ा नहीं आ रहा था। अनुपम ने गेंद को फिर जोर से फेंका और दोनों गेंद के पीछे–पीछे भागे। गेंद पेड़ों के झुरमुट में जाकर गिरी। आगे जंगल था। दोनों गेंद ढूंढने लगे। गेंद तो मिल गई पर उन्हें जंगल में जानवरों का डर लगने लगा। वे वहाँ से भागे, आगे एक चरागाह था। वहाँ कांता काकी बकरियाँ चरा रही थी। गेंद इधर–उधर फेंकने से बकरियाँ डर कर बिखरने लगी। कांता काकी ने दोनों को वहाँ से भगा दिया। वे गाँव में आ कर खेलने लगे। गेंद कमली बुआ की छत पर चली गई। अब दोनों वहाँ से भी भागे। कोई ठीक जगह नहीं मिल रही थी। दोनों गाँव के स्कूल में बने खेल मैदान में पहुँचे। रविवार छुट्‌टी का दिन था। यहाँ कोई मना करने वाला नहीं था। उन्हें अच्छा लगा। खूब खेले और खूब मजा आया। कहानी में आपने पढ़ा कि अनुपम खेलने के लिए अलग–अलग जगह गया। ये सभी भू–भाग ही हैं, पर सभी के अलग–अलग उपयोग हैं।

आओ करके देखें–

1. कहानी के आधार पर अनुपम और लक्ष्मी के गाँव की भूमि के छः उपयोग हो रहे हैं। बताओ क्या–क्या उपयोग हो रहे हैं?

   1...................................... 2.................................. 3..............................

   4.................................. 5.................................. 6..............................

2. आप जिस गाँव या शहर में रहते हैं, वहाँ भी भूमि के विभिन्न उपयोग देखे जा सकते हैं। अपने या किसी भी एक गाँव/शहर का भ्रमण कीजिए और वहाँ के भूमि उपयोग का अध्ययन कीजिए। मुख्य भूमि उपयोग की सूची बनाइए। कुछ भू–उपयोग अनुपम और लक्ष्मी के गाँव जैसे भी हो सकते हैं और कुछ अलग भी।

यदि आप गाँव में रहते हैं तो वहाँ भूमि का उपयोग अलग तरह का होगा। गाँव के अधिकांश भू–भाग का उपयोग कृषि, चारागाह और तालाब के रूप में होता है। जबकि नगर या शहर में आवासों, कार्यालय, उद्योग, परिवहन एवं बाग–बगीचों आदि में। इसी तरह पहाड़ी क्षेत्रों में भूमि का उपयोग खनन, वन, पशुचारण आदि कार्यों में होता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि अलग–अलग जगह भूमि का उपयोग अलग–अलग तरह का होता है। भूमि उपयोग के कुछ प्रमुख प्रकार निम्नलिखित है–

1. **वन भूमि–** वह विस्तृत भू–भाग जो प्राकृतिक वनस्पति से ढका हो वन भूमि कहलाता है। राष्ट्रीय उद्यान, वन्य जीव अभ्यारण्य, आखेट निषिद्ध क्षेत्र आदि इसी में सम्मिलित है।
2. **कृषि भूमि–** वह भूमि जिस पर मानव द्वारा फसलें उगाई जाती हैं, उसे कृषि भूमि कहते हैं।
3. **बंजर भूमि–** बेकार पड़ी वह भूमि जिसे कृषि योग्य भूमि में नहीं बदला जा सकता है उसे बंजर भूमि कहते हैं। जैसे–ऊँचे पर्वत, पथरीली भूमि, दलदल आदि।
4. **कृषि योग्य व्यर्थ भूमि–** बेकार पड़ी वह भूमि जिसे कृषि योग्य क्षेत्र में बदला जा सकता है, कृषि योग्य व्यर्थ भूमि कहलाती है।
5. **चारागाह भूमि–** वह सार्वजनिक भूमि जिस पर पशुओं को चराया जाता है, उसे चारागाह भूमि कहा जाता है।
6. **उद्यान भूमि–** वह भूमि जिस पर फलदार वृक्ष उगाये जाते हैं, उसे उद्यान भूमि कहते हैं।
7. **वर्तमान परती भूमि–** भूमि का उपजाऊपन बढ़ाने के लिए किसानों द्वारा एक या दो वर्षों के लिए खाली छोड़ी गई भूमि को वर्तमान परती भूमि कहा जाता है।
8. **पुरानी परती भूमि–** यदि किसी भूमि पर पाँच वर्षों तक कृषि नहीं की जाती है तो उसे पुरानी परती भूमि कहते हैं।
9. **अन्य कार्यो में प्रयुक्त भूमि–** ऊपर वर्णित भूमि उपयोगों को छोड़ कर शेष सभी कार्यों में प्रयुक्त भूमि को इस वर्ग में रखा जाता है। जैसे–मानव अधिवास, परिवहन, नहरें, उद्योग, दुकानें, खनन आदि में प्रयुक्त भूमि।

कृषि भूमि का हमारे लिए सर्वाधिक महत्व है, क्योंकि एक अनुमान के अनुसार विश्व के लगभग 97 प्रतिशत लोगों के भोजन का आधार कृषि ही है। कृषि भी दो प्रकार से की जाती है। किसान अपने परिवार के पालन–पोषण के उद्देश्य से कृषि करता है तो उसे जीवन निर्वाह कृषि कहते हैं। इस प्रकार की कृषि में परम्परागत कृषि उपकरणों का उपयोग अधिक होता है। भारत एवं राजस्थान के अधिकांश किसान इसी प्रकार की कृषि करते हैं। किसान द्वारा व्यापार के उद्देश्य से की गयी कृषि को व्यापारिक कृषि कहा जाता है। अमेरिका एवं कनाडा जैसे देशों में किसान इसी प्रकार की कृषि करते हैं। यहाँ खेतों का आकार बड़ा होता है जिसमें आधुनिक कृषि उपकरणों की सहायता से भारी मात्रा में उत्पादन कर एक साथ बेच दिया जाता है।

अर्जेन्टीना, न्यूजीलैंड, आस्ट्रेलिया, डेनमार्क, भारत आदि देशों की अर्थव्यवस्था में पशुपालन का योगदान भी अधिक है। इसलिए यहाँ चारागाहों का भी विशेष महत्व है। कुछ भूमि का उपयोग प्राकृतिक एवं मानव द्वारा निर्मित जल स्त्रोंतों में भी होता है, जैसे नदी, तालाब, झील, बाँध, कुआँ आदि। पीने, अन्य दैनिक उपयोग, सिंचाई आदि के लिए जल भी मानव की प्राथमिक आवश्यकताओं में से एक है। हमारी अर्थव्यवस्था को सम्बल देने के लिए कुछ भूमि का उपयोग खनन एवं उद्योगों के लिए भी किया जाता है। पर्यटन स्थलों के रूप में हमारे मनोरंजन के लिए तथा पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्य से वन्य जीव उद्यानों एवं अभ्यारण्य में भी कुछ भूमि का उपयोग किया जाता है।

स्वामित्व के आधार पर भूमि को निजी तथा सार्वजनिक भूमि में बाँटा जा सकता है। निजी भूमि पर किसी व्यक्ति विशेष का अधिकार होता है, जबकि सार्वजनिक भूमि पर पूरे समुदाय का अधिकार होता है। बाग–बगीचे, खेल का मैदान, चारागाह, वन, जलीय क्षेत्र आदि सार्वजनिक भूमि के उदाहरण हैं जिस पर समुदाय के सभी लोगों का समान अधिकार होता है। इसे साझा भू–संपत्ति संसाधन भी कहा जाता है। चारागाहों पर पशुपालन तथा वनों से ईंधन की लकड़ी, फल–फूल, इमारती लकड़ी आदि उपलब्ध होने से इनका स्थानीय भूमिहीन लोगों के लिए विशेष महत्व है।

आओ करके देखें–

1. आपके गाँव / शहर में स्थित सार्वजनिक भूमि का पता लगाकर उसके उपयोग पर एक टिप्पणी लिखिए।
2. पता लगाइए कि आपके क्षेत्र में किस प्रकार की कृषि की जाती है?
3. क्या आपके आस–पास के क्षेत्र में भूमि का उपयोग खनन, उद्योग, प्राकृतिक या मानव निर्मित जल स्त्रोत, वन्य जीव अभ्यारण्य, चारागाह, पर्यटन आदि में हो रहा है? इनके बारे में जानकारी एकत्र कीजिए।

ग्रामीण एवं शहरी परिवेश में भूमि उपयोग में अन्तर

(..)

(..)

आओ करके देखें–

ऊपर दिये गए चित्र को देखकर बताइए कि कौन–सा गाँव का चित्र है और कौन–सा शहर का। यह आपने कैसे पता लगाया? कारण भी बताइए।

नगर और गाँव के भूमि उपयोग में अन्तर होता है। शहरों में भूमि का मूल्य गाँवों की तुलना में अधिक होता है। नगरों में अधिवासों व जनसंख्या का घनत्व अधिक एवं गाँवों में कम होता है। कभी आपको अन्य गाँव/शहर में जाने का मौका मिले तो वहाँ के भूमि उपयोग पर ध्यान दें और उन स्थानों के भूमि उपयोग के अन्तर को पहचानने का प्रयास करें।

भू आकृतियाँ और भू–उपयोग

नीचे दिये गये चित्रों को ध्यान से देखिए।

पहला चित्र मैदानी भू–भाग है, दूसरा चित्र पहाड़ी भू–भाग है और तीसरा मरुस्थलीय भू–भाग है। तीनों भू–भाग में भूमि उपयोग मे अन्तर देखा जा सकता है। मैदानी क्षेत्र में भूमि का उपयोग कृषि कार्य में अधिक होता है, तो वहीं पहाड़ी क्षेत्र में वन एवं मरुथलीय क्षेत्र में व्यर्थ भूमि अधिक होती है। इसी प्रकार आप नदी के किनारे, समुद्री किनारे, द्वीप, पठारी भूमि आदि के चित्रों को एकत्र कीजिए और उनमें भू–उपयोग में अन्तर को देखिए और समझिए। एकत्रित किये गये चित्रों को एक चार्ट पर चिपका कर कक्षा में लगाइए।

कृषि, उद्योग, आवास, परिवहन आदि कार्यों का विकास पर्वतीय क्षेत्रों की तुलना में मैदानी क्षेत्रों में आसानी से हो जाता है। पठारी और पर्वतीय भू–भाग असमतल होते हैं इसलिए यहाँ मानवीय क्रिया–कलाप का कम विकास हो पाता है। इन्हीं प्राकृतिक परिस्थितियों के कारण पर्वतीय, पठारी एवं मरुस्थलीय भूमि पर कम जनसंख्या पाई जाती है। पर्वतीय भूमि का उपयोग सुरक्षा, पर्यटन, वन, चारागाह विकास हेतु अधिक होता है।

भूमि उपयोग में परिवर्तन

किसी क्षेत्र का भूमि उपयोग मुख्यतः वहाँ किये जाने वाले आर्थिक क्रिया–कलापों पर निर्भर करता है। समय के साथ मानव के आर्थिक क्रिया–कलापों में बदलाव आने से भूमि उपयोग भी बदल जाता है। आर्थिक क्रिया–कलापों के अतिरिक्त क्षेत्र की जलवायु, स्थलाकृति, मृदा, खनिज, जल उपलब्धता और जनसंख्या वृद्धि आदि का भी भूमि उपयोग पर प्रभाव पड़ता है। अनुमान है कि प्राचीन समय में पृथ्वी का अधिकांश भाग वनों से ढका हुआ था लेकिन वर्तमान में पृथ्वी के एक–तिहाई से भी कम भाग पर वन बचे हैं। मानव क्रिया–कलापों और बढ़ती जनसंख्या के फलस्वरूप संपूर्ण विश्व में भूमि उपयोग में परिवर्तन हुए हैं। शहरों के निकटवर्ती ग्रामीण क्षेत्रों में सर्वाधिक भूमि उपयोग परिवर्तन देखा जाता है। कृषि भूमि शहर के विकास के साथ धीरे–धीरे आवास, उद्योग, परिवहन आदि में परिवर्तित होती जा रही है।

क्र.स.	देश	भूमि उपयोग के अनुसार कुल भौगोलिक क्षेत्र का प्रतिशत			
		कृषि	चारागाह	वन	अन्य उपयोग
1.	भारत	60	4	23	13
2.	जापान	12	2	67	19
3.	ऑस्ट्रिया	6	56	14	24
4.	कनाडा	5	4	39	52
5.	ब्राजील	9	20	66	5
	विश्व	11	20	31	38

आओ करके देखें–

उपर्युक्त सारणी के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. उन देशों के नाम बताइए जिनमें निम्नलिखित भूमि उपयोग सबसे अधिक हैं?
   1. अन्य उपयोग .... 2. चारागाह ....
   3. वन भूमि .... 4. कृषि भूमि ....
2. निम्नलिखित देशों के भूमि उपयोग का अध्ययन कर अनुमान लगाइए कि वहाँ कौन–सी आर्थिक क्रियाएँ अधिक होगी ?
   1. भारत .... 2. ऑस्ट्रिया ....
   3. ब्राजील .... 4. कनाड़ा ....

मरुस्थलीय एवं दलदली भूमि की उपयोगिता में भी परिवर्तन हो रहा है। पश्चिमी राजस्थान में इंदिरा गांधी नहर से मरुस्थलीय भूमि में व्यापक भूमि उपयोग परिवर्तन हुआ है। जो भूमि पहले बेकार पड़ी रहती थी वर्तमान में उसी भूमि का उपयोग कृषि, उद्योग, नहर, परिवहन, खनन, सौर ऊर्जा एवं पवन ऊर्जा संयत्र लगाने आदि में किया जा रहा है। यह भूमि उपयोग परिवर्तन का एक प्रत्यक्ष उदाहरण है। इसी प्रकार विश्व के कुछ भागों में दलदली भूमि को सुखा कर उसे आवास एवं अन्य उपयोगों में लिया जा रहा है। कृषि भूमि का प्रतिशत विश्व के कुल भौगोलिक क्षेत्र का मात्र 11 प्रतिशत ही है तथा वन व घास के मैदानों का प्रतिशत भी घट कर क्रमशः 31 और 20 प्रतिशत रह गया है। जो भूमि उपयोग परिवर्तन के उदाहरण हैं। अतः समय एवं स्थान के अनुसार भूमि उपयोग लगातार बदलता रहता है। नीचे दिया गया आरेख आपको यह समझने में मदद करेगा।

बदलते समय के साथ विश्व के सभी क्षेत्रों में भूमि उपयोग में परिवर्तन होता रहा है। क्योंकि जनसंख्या वृद्धि के साथ आवास, कृषि, उद्योग, परिवहन आदि की आवश्यकता बढ़ती है, जिससे इनमें भूमि का उपयोग बढ़ता जा रहा है। लेकिन विश्व के कुल क्षेत्रफल को नहीं बढ़ाया जा सकता है। इसलिए जब भी किसी एक कार्य के लिए भूमि उपयोग बढ़ता है तो किसी दूसरे कार्य का भूमि उपयोग कम हो जाता है, और इसे ही भूमि उपयोग में परिवर्तन कहा जाता है। वनों को काट कर कृषि और चारागाहों का विकास करना, पहाड़ों को काट कर रास्ते बनाना, दलदलों को सुखा कर कृषि करना, समुद्रों के तटवर्ती उथले क्षेत्रों में भराव करके नगरों का विकास एवं कृषि करना, खनन शुरू करना आदि भूमि उपयोग परिवर्तन के उदाहरण हैं। नीचे दिए गए आरेख से स्पष्ट है कि भारत में पिछले कुछ दशकों में भूमि उपयोग में व्यापक परिवर्तन हुए हैं। भारत मे वन एवं अन्य भूमि उपयोग में वृद्धि हुई तथा कृषि, चारागाह एवं बंजर भूमि उपयोग में कमी आ रही है।

भारत में भूमि–उपयोग

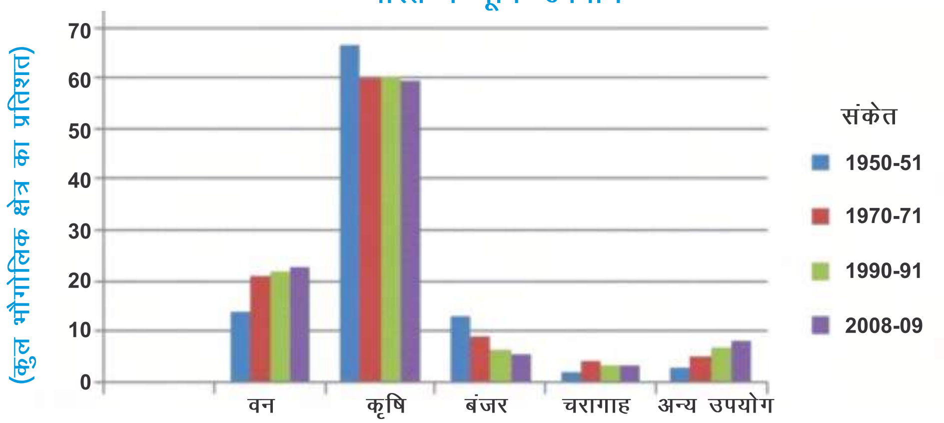

आओ करके देखें–

1. उपर्युक्त आरेख को देखकर भारत में हुए भूमि उपयोग परिवर्तन की कक्षा में चर्चा कीजिए।
2. अपने शिक्षक–शिक्षिकाओं, परिवार के बड़े सदस्यों से बातचीत कर पता लगाइए कि आपके शहर या गाँव में भूमि उपयोग में किस प्रकार का परिवर्तन हो रहा है और क्यों?

भूमि अवनयन

उपजाऊ भूमि की गुणवत्ता, उपयोगिता एवं उत्पादकता में कमी आना भूमि अवनयन कहलाता है। इसे भू–निम्नीकरण या भूमि की गुणवत्ता में कमी भी कहा जाता है। भूमि अवनयन प्राकृतिक व मानवीय दोनों कारणों से होता है लेकिन मानवीय कारणों से होने वाला भूमि अवनयन वर्तमान में चिन्ता का विषय है। मानचित्र से स्पष्ट है कि विश्व का अधिकांश भाग मानव द्वारा भूमि के अविवेकपूर्ण उपयोग एवं अत्यधिक दोहन के कारण भूमि अवनयन की समस्या से ग्रसित है। ऐसी भूमि का उपयोग लगातार कम हो रहा है। इससे कृषि, वनस्पति एवं मानव विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। मानचित्र में भारत की भूमि अवनयन की स्थिति को देखिए। सामान्यतः भारत में भूमि अवनयन की समस्या देखी जाती है। आगे दिये गये मानचित्र को देखकर बताइए कि विश्व के किन भागों में भूमि अवनयन अधिक है तथा किन भागों में कम है?

विश्व में मृदा अवनयन से प्रभावित क्षेत्र

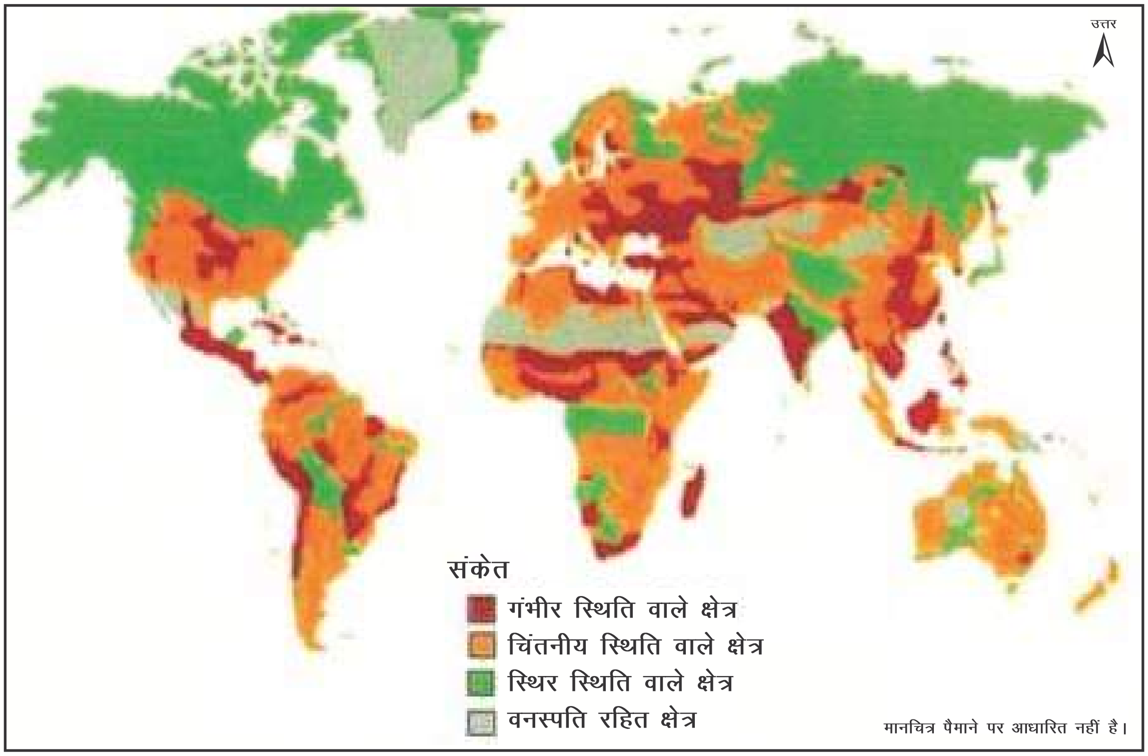

भूमि अवनयन के कारण

1. मृदा अपरदन
2. मृदा में लवणता वृद्धि
3. अत्यधिक खनन
4. वनों की कटाई
5. मरुस्थलीकरण
6. अति पशुचारण
7. विकासात्मक कार्य
8. अधिक सिंचाई
9. नहरी जल का रिसाव
10. शहरी ठोस कचरा एवं औद्योगिक अपशिष्ट
11. रासायनिक खाद और कीटनाशकों का उपयोग आदि।

नीचे दिये गये चित्रों को देखिए और पिछले पृष्ठ पर दिए गये भूमि अवनयन के कारणों की पहचान कीजिए।

सड़क निर्माण हेतु पहाड़ों की कटाई

अत्यधिक खनन

मृदा का कटाव

औद्योगिक अपशिष्ट

जल रिसाव की समस्या

रासायनिक खाद एवं कीटनाशकों का प्रयोग

वनों की कटाई

अत्यधिक भूजल दोहन का प्रभाव

जनसंख्या एवं अधिवासों का बढ़ना

अनियंत्रित पशुचारण

मरूस्थल का विस्तार

क्या आप जानते हैं–

भारत का सबसे बड़ा महानगर मुम्बई प्रारम्भ में सात द्वीपों पर बसा था। बाद में इन द्वीपों के बीच के कम गहरे समुद्री भाग को मलबा डाल कर भर दिया गया जिस पर वर्तमान महानगर का विकास हुआ है।

नीदरलैंड का उत्तरी–पश्चिमी भाग समुद्र तल से लगभग 1 मीटर ऊँचा है, जो ज्वार के समय डुब जाता है। इस समस्या से बचने के लिए समुद्र एवं स्थल के मध्य एक कृत्रिम बाँध बनाया गया है। बाँध द्वारा ऐसी सुरक्षित भूमि को यहाँ पोल्डर कहा जाता हैं।

भूमि संरक्षण

भूमि संरक्षण से तात्पर्य भूमि की गुणवत्ता में आ रही कमी को रोक कर उसे हमेशा के लिए सुरक्षित करना है। सभी जीव भूमि पर ही अपनी सारी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। स्वयं मानव जन्म से लेकर मृत्यु तक अपने सभी क्रिया–कलाप भूमि पर ही संचालित करता है। इसलिए भूमि अवनयन को रोकना आज की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए भोजन, पशुओं के लिए चारागाह, कृषि संबंधी उद्योगों के लिए कच्चा माल आदि सभी भूमि की गुणवत्ता पर ही निर्भर करते हैं। भूमि संरक्षण के लिए मृदा अपरदन को कम करना, अवैधानिक खनन एवं स्थानान्तरित कृषि पर रोक लगाना, वृक्षारोपण करना, मरुस्थलीकरण को रोकना, अति पशुचारण पर रोक, नहरों के रिसाव को कम करना, औद्योगिक अपशिष्ट तथा शहरी ठोस अपशिष्ट का उचित निपटान करना, कृषि के लिए जैविक खाद का उपयोग करना, जन जागरूकता फैलाना आदि उपाय करना अत्यंत आवश्यक है।

मरुस्थल के बढ़ने से रोकने के लिए लगाए गए पंक्तिबद्ध वृक्ष

भूमि संरक्षण सरकारी एवं व्यक्तिगत दोनों स्तरों पर किया जा सकता है। पश्चिमी राजस्थान में मरुस्थल के विस्तार को रोकने के लिए जोधपुर में केंद्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान केंद्र ''काजरी'' (CAZRI) की स्थापना की गयी है। काजरी का कार्य मरुस्थल में पेड़–पौधों, चारागाह, पशु, जल एवं मृदा का संरक्षण कर मरुस्थल की पारिस्थितिकी को बनाए रखना है।

शब्दावली (Glossary)

उबड़–खाबड़	–	ऊँचा–नीचा
चारागाह	–	पशुओं के चरने का स्थान
वानिकी	–	पेड़–पौधों एवं वनों से संबंधित
अवनयन	–	प्राकृतिक गुणवत्ता में कमी
उन्यन	–	उत्तरोत्तर वृद्धि

अभ्यास प्रश्न

1. सही विकल्प को चुनिए–

 (i) पोल्डर किस देश में पाए जाते हैं–

 (क) इंग्लैंड (ख) जापान (ग) नीदरलैंड (घ) मिश्र ( )

 (ii) वह भूमि जिस पर फलदार वृक्ष उगाए जाते हैं, उसे कहा जाता है–

 (क) उद्यान भूमि (ख) चरागाह भूमि

 (ग) परती भूमि (घ) कृषि भूमि ( )

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

 (I) पश्चिमी राजस्थान में मरुस्थल के विस्तार को रोकने के लिए .... में ''काजरी'' की स्थापना की गयी है।

 (ii) मानव क्रिया–कलापों और बढ़ती जनसंख्या के फलस्वरूप संपूर्ण विश्व में .... उपयोग में परिवर्तन हुए हैं।

 (iii) कृषि योग्य भूमि की गुणवत्ता, उपयोगिता एवं उत्पादकता में कमी आना भूमि .... कहलाता है।

 (iv) भारत का सबसे बड़ा महानगर .... प्रारम्भ में सात द्वीपों पर बसा था।

3. भूमि उपयोग किसे कहते हैं?
4. गाँवों में किस प्रकार का भूमि उपयोग अधिक मिलता है? और क्यों?
5. भूमि अवनयन के लिए जिम्मेदार कारकों के नाम लिखिए।
6. भूमि उपयोग के वर्गों में अन्तर स्पष्ट कीजिए।
7. शहर और ग्रामीण भूमि–उपयोग में क्या अन्तर है?
8. वर्तमान में भूमि संरक्षण क्यों आवश्यक है? यदि हमने भूमि संरक्षण नहीं किया ता हमें किन दुष्प्रभावों का सामना करना पड़ेगा?